“ जैन दर्शन में प्रजातंत्र की संकल्पना ”

सुनील कुमार मिश्र

प्रवक्ता इतिहास

फुंदी सिंह लौना राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जालौन

जनपद जालौन (उत्तर प्रदेश)

प्रजातंत्र केवल इसलिए श्रेष्ठ शासन-प्रणाली नहीं है कि वह राजतंत्र, सामंतशाही, अधिनायकवाद अथवा किसी अन्य विचारधारा या राजनीतिक दल विशेष के स्वेच्छाचारी शोषण या दमन से मुक्त करती है, बल्कि इसलिए भी श्रेष्ठ है कि वह समाज के प्रत्येक व्यक्ति को यथासंभव उन्नति का अवसर प्रदान करती है और प्रत्येक व्यक्ति को मानवीय गरिमा प्रदान करती है। प्रजातंत्र हर व्यक्ति के शोषण-रहित सामग्र विकास की विचारधारा रखता है। इसलिए प्रजातंत्र जन दर्शनवत सर्वोदयी का माध्यम है।

जैन साहित्य तीर्थंकरों द्वारा उपदेशित, गणधरों द्वारा संग्रहीत तथा परवर्ती आचार्यों द्वारा व्याख्यायित ज्ञान का भंडार है। जिसमें इतिहास, भूगोल, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष, कला, चिकित्सा, न्याय शास्त्र, धर्म, नीति, राजनीति, समाजशास्त्र आदि का प्रचुर ज्ञान संचित है। इस साहित्य में प्राचीन राजनीति एवं संस्कृति का अक्षय ज्ञान है तथा इसी साहित्य में निहित राजनीतिक मूल्यों एवं विचार आज के परिप्रेक्ष्य में अवश्य ही ग्राह्य एवं आदर्श है।

जैन ग्रंथों में जिन शासन के अंतर्गत सम्यक् आचरण, सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान एवं सम्यक् चरित्र पर विशेष बल दिया गया है। जिन शासन के अंतर्गत व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण एवं समाज के समुचित विकास का विचार निहित है। जैनाचार्यों द्वारा वर्णित नियम, आचार-विचार, कर्तव्य एवं अधिकारों का सम्यक् समन्वय समाज में संतुलन बनाए रखने में सहायक होता है। जैनाचार्यों ने राजधर्म, दंड व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, शासन प्रणाली एवं सामाजिक व्यवस्था के संबंध में विस्तृत विचार प्रस्तुत किए हैं। इन विचारों में लोकतांत्रिक मूल्यों की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।जैन ग्रंथों में राजा, मंत्री, सभा आदि के कर्तव्यों का विस्तृत वर्णन मिलता है। राजा को प्रजा का हितैषी, न्यायप्रिय एवं धर्मपरायण बताया गया है। जैनाचार्यों ने शासक के लिए यह आवश्यक बताया है कि वह प्रजा के हित में कार्य करे तथा न्याय और समता का पालन करे। प्रजा के कल्याण, सुरक्षा एवं अधिकारों की रक्षा करना राजा का प्रमुख कर्तव्य माना गया है। जैन दर्शन में राज्य और समाज के बीच सामंजस्य स्थापित करने पर बल दिया गया है।

प्राचीन पुराणों में जैनाचार्यों एवं जैन मनीषियों एवं विद्वानों द्वारा ऐसे सिद्धांत निर्धारित किए गए जिनसे समाज एवं राष्ट्र दोनों की उन्नति एवं विकास संभव हो सके। जैनाचार्यों ने केवल राजनीति एवं नीति के नियम जीवन की सरलता, शुद्धता एवं आपसी मानवीय व्यवहार के संदर्भ में ही नहीं बल्कि आधुनिक राजनीति के लिए भी उन्हें उपयोगी सिद्ध होते हैं। जैन आचार नीति में नैतिकता के अभाव से ही नहीं अपितु उनके अनुपालन के अभाव से भी विसंगतियां उत्पन्न होती हैं। जैन दर्शन अहिंसा प्रधान धर्म है।

जैन आगम एवं पुराण ग्रंथ स्वयं सार्वभौमिक एवं सर्वदा शाश्वत मूल्यों के आधार हैं, जो जीवन के विविध पक्षों को उजागर करते हुए मनुष्य को परम शांति के मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करते हैं। जैन पुराण साहित्य का मुख्य उद्देश्य जैन आगमों के जीवन मूल्यों को सरल, सरस भावमय भाषा में जन सामान्य तक पहुंचाना है। जैन आगम/पुराण साहित्य के द्वारा उपदेश देने वाले भगवानों, उनके शिष्य गणधरों द्वारा कही बातें और आचार्यों द्वारा व्याख्यायित होकर आज जैनागम/पुराण साहित्य के रूप में

भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि है। आत्मा को शाश्वत सत्ता का उद्घाटन करने वाले यह साहित्य जीवन के संघर्ष में भी प्रेरणा प्रदान करता है। इन पुराणों के रचयिता केवल धार्मिक ही नहीं अपितु जीवन की सार्थकता एवं लक्ष्य की आवश्यकता को भी समझते हैं। अहिंसा, सत्य, संयम, त्याग, वैराग्य तथा तप के अग्नि में अपने जीवन को तपाकर आत्मा को आलोकित किया था। यह कथाएं केवल धार्मिक/आध्यात्मिक नहीं अपितु वैज्ञानिक व व्यावहारिक भी लोगों के लिए हैं, जिनमें विभिन्न जीवन मूल्यों का प्रतिबिम्ब देखने को मिलता है। उनकी रचनाएं जीवन मूल्यों को मानव जीवन के प्रति प्रेम और अनुशासन का मार्ग प्रशस्त करती हैं। इसी कारण इनके द्वारा रचित जैन साहित्य, जीवन के लिये एक जीवनमूल्य एवं बौद्धिक प्रेरणा के साथ-साथ लोकव्यवहार के लिये भी उपयोगी है।

आगमों में पुराणों के अनुसार नैतिकता या जीवन मूल्यों को धारण करना कोई कला नहीं है, जिसका प्रशिक्षण दिया जा सके। यह तो एक प्रकार का आचरण या अभ्यास है, जो कि संकल्प शक्ति से ही प्राप्त किया जा सकता है। यही धर्म-आचरण, कर्तव्य-अकर्तव्य एवं व्यक्ति का व्यवहार है।

जैनागमों व पुराणों में उल्लिखित शाश्वत एवं स्थायी मूल्यों का मूल आधार प्रमाणिकता है। प्रमाणिकता गणित के नियमों की भांति निश्चित और स्थायी है। इनका निर्धारण धार्मिक एवं सामाजिक मूल्यों के आधार पर हुआ है। उनमें किसी प्रकार का परिवर्तन संभव नहीं है। इनमें तात्कालिकता, आधुनिकीकरण का प्रश्न नहीं है। धर्म के अध्ययन व अनुशीलन में नैतिक मूल्यों का सामाजिक परिस्थितियों के साथ परिवर्तन संभव नहीं है। इसी कारण भगवान महावीर द्वारा प्रदत्त सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक आचारसंहिता के मूल्यों का महत्व आज भी उतना ही है जितना उस समय था।

जैनागम व पुराण साहित्य आध्यात्मिक मूल्यों की दृष्टि से भी अत्यन्त समृद्ध है। अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह आदि सार्वभौमिक मूल्यों के अतिरिक्त इनमें अनासक्ति, व्यवहारिक उदारता, समता, नियम, स्वाध्याय, ध्यान आदि मानवीय जीवन मूल्यों पर भी प्रकाश डालते हैं। इसी कारण पुराणों में प्रतिपादित आचार संहिता जहाँ एक ओर व्यक्ति को गुणों से युक्त करती है, वहीं दूसरी ओर पारलौकिक दृष्टि से भी उसकी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। जीवन मूल्यों व आचार संहिता के व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक पक्षों का समन्वय है। ये जीवन मूल्य जहाँ सामान्य व्यक्ति को एक संतुलित व्यवहारिक जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं, वहीं उसे आध्यात्मिक साधना के मार्ग को प्रशस्त करते हैं। पुराणों में वर्णित प्रमुख मूल्यों का विशेष यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत है।

प्रजातंत्र ही जैन दर्शन का हृदयतंत्र :

इस प्रकार हर व्यक्ति और समूह के द्वारा परिभाषित सहभागिता ही प्रजातंत्र का हृदयतंत्र है और यही जैन दर्शन का परस्परोपग्रहो का सिद्धांत है।

परस्परोपग्रहोजीवानाम् का अर्थ है – विकास की प्रक्रिया में सभी जीवों का परस्पर सामूहिक रूप में सक्रिय होना। परस्परोपग्रहोजीवानाम् का सामूहिक रूप से जीने के लक्ष्य लेकर चलती है। यह व्यक्तियों को स्वयं जीवन में आनंद लेने की सहज प्रवृत्ति को विकसित करती है।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' की भावना की अभिव्यक्ति है। यदि राष्ट्र स्वस्थ विकसित है तो उसके सदस्य (नागरिक) में अकेले-अकेले के बजाय मिल-जुलकर जीने और आनंद लेने की क्षमता अवश्य होगी।

प्राचीन काल से लोक-कलाओं का विकास एवं लोक-संस्कृति का विकास सामूहिक क्रियाओं के रूप में होता रहा है। अलगाव वाला स्वार्थपूर्ण जीवन पाशविक वृत्ति का फल है और सह-अस्तित्वमूलक जीवन सांस्कृतिक उन्नयन का, प्रजातंत्र का।

भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक देश है। इस रूप में भारत में प्रजातंत्र प्रतिष्ठित है किन्तु प्रश्न उठता है कि क्या भारतीय राजनीति व समाज में प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना हो सकी है? क्या अब सत्ता की लालसा ने प्रत्येक क्षेत्र में पवित्रता को विखंडित किया है? आज देश प्रजातंत्र के होते हुए भी हिंसा और आतंक से ग्रसित है। मानसिक तनाव, हिंसा, आतंकवाद, नक्सलवाद, असहिष्णुता, भाषावाद, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं से जूझता प्रजातंत्र अपनी मूल छवि को खोता जा रहा है। व्यक्ति का चरित्र गिरता जा रहा है। अतः प्रजातंत्र की सफलता के लिए व्यक्ति का चारित्रिक विकास जरूरी है। व्यक्ति का चरित्र निर्माण , राष्ट्र का चरित्र निर्माण करता है, प्रजातंत्र की सफलता के लिए व्यक्ति का चारित्रिक विकास जरूरी है। व्यक्ति के चरित्र में उन्नति धर्म और दर्शन से हो सकती है राजनीति से भी महत्वपूर्ण है कि किसी राष्ट्र का चरित्र और राजनेता से भी बड़ा होता है चरित्रवान व्यक्ति का निर्माता। व्यक्ति का निर्माण करने में संकल्प शक्ति, आत्मानुशासन, चारित्रिक विकास की आवश्यकता होती है। जैन दर्शन के अनुसार राष्ट्रीय चरित्र के सुदृढ़ निर्माण के लिए व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करना ही होगा। व्यक्ति के चरित्र निर्माण पर ही प्रजातंत्र की सफलता निहित है। अतः व्यक्ति के चरित्र निर्माण पर बल देने के कारण जैन दर्शन की महत्ता है।

प्रजातंत्र के मूल सिद्धान्त जैसे – शांति, समन्वय, अहिंसा, सहिष्णुता, विश्व–बंधुत्व, समानता को प्रतिस्थापित करना आवश्यक है और ये सिद्धान्त हमें जैन दर्शन के सिद्धान्तों में मिलते हैं। डॉ. राधाकृष्णन ने कहा था आज का प्रजातंत्र महावीर के सिद्धान्तों पर आधारित है। जैन दर्शन में जीव का अस्तित्व प्रजातंत्र का आधार है। इसलिए प्रजातंत्र का मूल मूल्य अहिंसा और सहिष्णुता है। हिंसा की वृद्धि प्रकृति और प्रजातंत्र के विरोधाभास को बढ़ावा देती है और नैतिक मूल्यों का विकास न हो यह संभव नहीं। उपयुक्त मूल्यों पर प्रजातंत्र को स्थापित करना ही जैन दर्शन में प्रजातंत्र की अवधारणा को सशक्त करता है।

व्यक्ति की स्वतंत्रता प्रजातंत्र का प्राणतत्व है। व्यक्ति को स्वतंत्रता की सर्वाधिक चाह रहती है, जो प्रजातंत्र में ही संभव है। अधिनायकवादी प्रणाली में उसका हनन होता है। सबके लिए समान अवसर और सबको मत देने का अधिकार, ये प्रजातंत्र के अपने विशिष्ट मूल्य हैं। स्वतंत्रता और समानता जैन दर्शन के मूल सिद्धान्त हैं।

आज जातिवाद भी प्रजातंत्र को खोखला कर रहा है। भगवान महावीर के समय में असमानता, अन्धविश्वास, हिंसा, जातिवाद और नारी दासता आदि सामाजिक कुरीतियों से समाज जर्जर हो रहा था। व्यक्ति को जातिवाद के आधार पर ही श्रेष्ठ या निकृष्ट माना जाता था।

जैन दर्शन की मान्यता है कि एक जीव अनेक बार उच्च गोत्र में उत्पन्न होता है और अनेक बार नीच गोत्र में जन्म लेता है। इसलिए न कोई छोटा है और न कोई बड़ा। हम देखते हैं महावीर के दर्शन में अनेक समस्याओं का समाधान छिपा पड़ा है। सामाजिक क्षेत्र में जात–पात, छुआछूत, अमीर–गरीब के भेद को मिटाने वाला यह अद्भुत दर्शन है।

प्रजातंत्र में स्त्री और पुरुष दोनों को समान अधिकार हैं। लेकिन वर्तमान में नारी की स्थिति कुछ क्षेत्रों को छोड़कर अच्छी नहीं है। जैन धर्म में नारी को धार्मिक एवं दार्शनिक जीवन में समान रूप से स्वीकार किया गया है तथा सामाजिक भूमिका में भी वह अधिकारों की भागीदार है। पुरुष और स्त्री एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों का पृथक–पृथक महत्व भी है किन्तु वही मिल–जुलकर गृहस्थ जीवन को निखारते हैं जो निरन्तरता को बनाए रखते हैं। नारी की गरिमापूर्ण भूमिका के लिए जैन दर्शन का महत्व सर्वाधिक है।

प्रजातंत्र का मूल मंत्र है – शासन कम, स्वशासन अधिक। स्वशासन एवं संयम में भेद करना कठिन है। जैन दर्शन का प्रमुख तत्व है – संयम ही जीवन है। संयम के बिना स्वशासन जीवन नहीं रह सकता और स्वशासन के बिना प्रजातंत्र संभव नहीं हो सकता।

जीवन व्यवहार में राजसत्ता का अस्तित्व एक विलक्षण व्यावहारिक सत्य है। व्यवस्था और निश्चितता के दर्शन में राजसत्ता की अनिवार्यता अपरिहार्य है। अतः उनके नियमों का पालन अभिप्रेत नागरिकों के लिए अनिवार्य है। महावीर ने राजसत्ता के स्थापित नियमों के उल्लंघन को भी चोरी की श्रेणी में रखा है। इस तरह के नियम जन सुरक्षा और विकास के अनुकूल होते हैं। निश्चित ही इसमें संवेदना, सहानुभूति, सहयोग की भावनाएं अन्तर्निहित हैं। राजसत्ता के मूल नियमों का कई व्यक्ति चोरी-छिपे हनन करते हैं तो वह पूर्ण राज्य के हित और विकास की चोरी है। राजसत्ता के नियमों का पालन यदि सभी व्यक्ति करें तो प्रजातंत्र बहुत सुदृढ़ हो सकता है।

राजसत्ता वही उपयोगी है जो जनहित में प्रवृत्त हो। जो राजसत्ता सत्ताधिकारियों के ही हितों को सुरक्षित करे और आम जनता को पददलित और प्रताड़ित करे उसे उपयोगी नहीं समझना चाहिए। ऐसी दुष्ट सत्ता को प्रजा के उत्थान के लिए जनहितार्थ अधिकार से प्रजातंत्र देते हुए उखाड़ फेंकना चाहिए। इस प्रकार जैन दर्शन के अनुसार प्रजाहित में शासन के नियमों का पालन प्रजा का कर्तव्य है। यदि प्रजाहित में शासन न हो तो उसे उखाड़ फेंकने का अधिकार भी प्रजा को है। यही वास्तविक प्रजातंत्र है।

प्रजातंत्र सर्वोत्तम शासन तंत्र है यदि उस तंत्र को संचालित करने वाले और उसका चयन करने वाले व्यक्ति सही हों। प्रजातंत्र प्रणाली में वही शासक सफल बन सकते हैं जो जनता के सेवक बनकर देश की सेवा करते हैं ,न कि मालिक बनकर। जैन दर्शन कहता है कि राजसत्ता गौण की तरह प्रेम से ही प्रजा का पालन-पोषण करोगे तो देश की धरती कल्पवृक्ष बनकर भांति-भांति के अनेक फल देने लगेगी। सत्ताधारी नेता कुशल राजनीतिज्ञ व प्रजाहित पालक बनकर प्रजातंत्र की रक्षा का दायित्व लें।

जैन न्याय का एक सिद्धांत है – यथा सत् तत्र सम्वृति सः अर्थात् जिसका अस्तित्व है उसका प्रतिपक्ष है, जिसका प्रतिपक्ष नहीं है उसका अस्तित्व नहीं है। निरंकुश शासन को बदलने का अधिकार प्रजा को पूर्णतः होता है। यदि प्रतिपक्ष न हो तो निरंकुश शासन की घट्टोपंक्ति की संभावना पूर्णतः बनी जाती है। इसलिए प्रतिपक्ष का होना भी आवश्यक है। जीवन का यह स्वस्थ व्यवस्था का रहस्य है – समन्वय अपने विचार और अपनी नीति का आग्रह सभी में होता है। किन्तु वह इस सीमा तक न हो कि मनुष्य दूसरों के विचारों में सत्य न देख सके। दूसरों की नीति के यथार्थ को न समझ सके। समन्वय जैन दर्शन की जीवन शैली का एक महत्वपूर्ण अंग है। इससे प्रजातंत्र को सुदृढ़ आधार मिलता है।

जैन दर्शन का धर्म एवं प्रजातंत्र का आदर्श –

1. अहिंसा : जैन दर्शन मूलतः अहिंसा पर आधारित शासन प्रणाली है। प्रजातंत्र अहिंसा का ही व्यावहारिक प्रयोग है। अहिंसा के पाँच मौलिक सूत्र हैं –

(1) स्वतंत्रता, (2) सापेक्षता, (3) समन्वय, (4) समानता, (5) सहअस्तित्व।

इनका अभाव प्रजातंत्र का अस्तित्व, इनकी उपेक्षा प्रजातंत्र की उपेक्षा। हिंसा की बढ़ती प्रवृत्ति और प्रजातंत्र में विरोधाभास है। अहिंसा जैन दर्शन का मूल सिद्धांत है। वस्तुतः प्रजातंत्र स्वतंत्रता, समानता, सापेक्षता, समन्वय, सहअस्तित्व पर आधारित अवधारणा है। इन्हीं सिद्धांतों पर आज का प्रजातंत्र विकसित है। अहिंसा की प्रवृत्ति तथा प्रजातंत्र में विरोधाभास है। यदि हम विश्व के समस्त प्राणियों की एकता के विचार को स्वीकार करें तो हमें यह मानना होगा कि जैसे हमें जीने का अधिकार है उसी प्रकार अन्य प्राणियों को भी जीने का प्राकृतिक अधिकार है। प्रजातंत्र का मूल सिद्धांत भी यही है कि "जियो और जीने दो"। जैन दर्शन का भी यही मूल ध्येय है।

2. **समानता** : जैन दर्शन समता एवं समानता पर आधारित दर्शन है। प्रजातंत्र भी समता एवं समानता का दर्शन है। जैन दर्शन जाति के आधार पर किसी को उच्च अथवा निम्न नहीं मानता है। इसी प्रकार प्रजातंत्र में भी सभी व्यक्ति समान हैं। सभी को आगे बढ़ने का समान अवसर है। चाहे वह ब्राह्मण

हो, क्षत्रिय हो, वैश्य हो अथवा शूद्र हो। व्यक्ति व्यक्ति है। गुण सम्पन्न है तो बिना किसी भेदभाव के आगे बढ़ सकता है।

अर्थात व्यक्ति कर्म से ही ब्राह्मण होता है, कर्म से क्षत्रिय होता है, कर्म से वैश्य होता है और कर्म से शूद्र होता है। वास्तव में कोई भी व्यक्ति उच्च कुल में जन्म लेने से उच्च नहीं होता है। इसी प्रकार नीच कुल में जन्म लेने मात्र से कोई नीच नहीं होता है। उच्चता और नीचता मनुष्य की अच्छी-बुरी प्रवृत्तियों पर आधारित है। इस प्रकार जैन दर्शन जाति भेद को अमान्य मानता है। समानता प्रजातंत्र का भी आधारभूत सिद्धांत है।

3. **आर्थिक समानता** : प्रजातंत्र में आर्थिक समानता भी आवश्यक है। केवल राजनीतिक प्रजातंत्र, प्रजातंत्र का आदर्श रूप नहीं है। प्रजातंत्र का एक प्रकार आर्थिक प्रजातंत्र भी है। आर्थिक समानता की प्राप्ति में जैन दर्शन के सिद्धांत भी अपना महत्वपूर्ण योगदान रखते हैं। जैन दर्शन आवश्यकता से अधिक किसी भी वस्तु सामग्री के संग्रह को अनुचित मानता है तथा जैन धर्म में आर्थिक समानता की स्थापना के लिए अपरिग्रह तथा इच्छा परिमाण ये दो व्रत दिए हैं। इसके साथ ही जैन दर्शन ने विसर्जन और साधन शुद्धि का बल भी दिया है।

जैन दर्शन इस बात पर बल देता है कि शुद्ध साधनों से अर्जित धन का उपयोग केवल अपने लिए ही नहीं करें बल्कि लोक कल्याण में उनका सदुपयोग भी करें। अपरिग्रह सिद्धांत जीवन में सादगी, संयम और शुद्धता का भाव जाग्रत कर व्यक्ति को लोक कल्याण और परोपकार की ओर प्रेरित करता है। यही वास्तव में प्रजातंत्र का प्रेरणा स्रोत है। अपरिग्रह और विसर्जन के व्रतों को यदि व्यापक स्तर पर धारण किया जाए तो आर्थिक विषमता दूर होगी और वास्तविक प्रजातंत्र का मार्ग सुगम होगा।

4. **स्वतंत्रता** : प्रजातंत्र का एक अन्य महत्वपूर्ण सिद्धांत स्वतंत्रता है। प्रजातंत्र में सभी व्यक्तियों को राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। जैन दर्शन भी व्यक्ति की स्वतंत्रता का समर्थक है। जैन दर्शन बाहरी स्वतंत्रता के साथ व्यक्ति की आंतरिक स्वतंत्रता पर भी बल देता है। जैन दर्शन के अनुसार राजनीतिक स्वतंत्रता तो सीमित स्वतंत्रता है। हम तो इससे भी अधिक स्वतंत्र होने के इच्छुक हैं। **आचार्य तुलसी** के अनुसार मनुष्य को बाँधने वाला सबसे बड़ा तत्व है उसकी आसक्त प्रवृत्तियां। जब तक उनसे मुक्ति नहीं मिलती है कर्मों के कारागार से छुटकारा नहीं मिल सकता है। तब तक स्वतंत्रता प्राप्ति का सपना अधूरा है।

5. **आत्म-निर्णय का अधिकार** : जैन दृष्टि में हमारे भाग्य का निर्णय किसी दूसरी सत्ता के हाथ में नहीं है। यह सार्वभौम सत्ता के प्रतिकूल है। दुःख और सुख दोनों हमारी ही सृष्टि हैं। तुम्हीं अपने मित्र और शत्रु हो। यह निर्णय तुम्हीं को करना है कि तुम क्या होना चाहते हो। जनता के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत है क्योंकि यही स्वतंत्रता को महत्व दिया गया है। जहाँ व्यक्ति को आत्मनिर्णय का अधिकार नहीं होता, वहाँ उसका कर्तव्य कुंठित हो जाता है।

6. **आत्मानुशासन** : महावीर ने कहा– "दूसरों पर हुकूमत मत करो। हुकूमत करो अपने शरीर पर, वाणी पर और मन पर।" महावीर के इन शब्दों में छिपे रहस्य की ओर संकेत करते हुए कहा जा सकता है कि जनतंत्र की सफलता आत्मानुशासन पर निर्भर है। बाहरी नियंत्रण व्यक्ति की निर्बलता का द्योतक है।

7. **सापेक्षता** : सापेक्षता का अर्थ है कि प्रत्येक समय अवसर चलते समय एक कदम आगे बढ़ता है दूसरा पीछे। पीछे वाला आगे और पीछे आगे हो जाता है तभी आदमी आगे बढ़ता है। यह सत्य के ज्ञान को लचीलापन देता है। महावीर कहते हैं– "सापेक्षता जनतंत्र की रीढ़ है।" नीतियां भिन्न होने पर भी यदि सापेक्षता हो तो अवांछनीय अलगाव नहीं होगा।

8. **बंधुत्व** : प्रजातंत्र का एक अन्य सिद्धांत बंधुत्व है। प्रजातांत्रिक प्रणाली बंधुत्व पर आधारित शासन प्रणाली है। जैन दर्शन में भी बंधुत्व पर बहुत बल दिया गया है। विश्व बंधुत्व, भाईचारा, मैत्रीभाव आदि जैन दर्शन के जीवन-मूल्य हैं। यही प्रजातंत्र का मूल है। जैन दर्शन बंधुत्व को महत्वपूर्ण मानता है क्योंकि जैन दर्शन सभी प्राणियों के प्रति समदृष्टि रखता है। अतः सभी जीवों के प्रति उसकी बंधुता है। इसी प्रकार प्रजातंत्र का महत्वपूर्ण सिद्धांत बंधुत्व है जो सभी प्राणियों में भाईचारे की भावना को साकार करता है।

प्रजातंत्र के सिद्धांत में अपनी आस्था व्यक्त करने के साथ ही जैन दर्शन के महत्वपूर्ण सिद्धांत भी प्रजातंत्र से मेल खाते हैं तथा प्रजातांत्रिक समस्याओं के समाधान में भी जैन दर्शन ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अतः हम कह सकते हैं जैन दर्शन में प्रारंभ से ही प्रजातंत्र भावना विद्यमान थी तथा बाद के आचार्यों ने जैन दर्शन के मूल सिद्धांतों व आधुनिक प्रजातंत्र में सामंजस्य स्थापित कर जैन दर्शन को गत्यात्मक बनाते हुए भारतीय प्रजातंत्र को भी नवीन आयाम देने का प्रयास किया है।

संदर्भ सूची

(1) पं. कैलाशचन्द्र जी सिद्धांतशास्त्री पुस्तक, जैनधर्म

(2) जैनशासन–विचित्ररत्न धर्म दिवाकर पं. सुमेरचन्द्र दिवाकर

(3) जैन शासन – पं. सुमेरचन्द्र दिवाकर

(4) धार्मिक आंदोलन एक सम्यक अध्ययन – लेखकः राहुल द्विवेदी व जे. डी. सिंह

(5) मारुति नंदन तिवारी, जैन प्रतिमा विज्ञान, वाराणसी वर्ष 1981